IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, July 2024

"पर्यावरणीय ह्रास का परिचयः—कारण व समाधान"

मधुलता कुशवाहा
शोधार्थी भूगोल
अवधेशप्रताप सिंह विश्वविद्यालय
रीवा (म.प्र.)

डॉ. आर. के. शर्मा
प्रभारी प्राचार्य
शासकीय महाविद्यालय, रामनगर
सतना (म.प्र.)

परिचय

पर्यावरणीय ह्रास संसाधनों जैसे हवा , पानी और मिट्टी की गुणवत्ता में कमी, पारिस्थितिकी तंत्र काविनाश, आवास का विनाश , वन्यजीवों का विलुप्त होना और प्रदूषण के माध्यम से पर्यावरण की गिरावट है । इसे पर्यावरण में किसी भी परिवर्तन या गड़बड़ी के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसे हानिकारक या अवांछनीय माना जाता है। पर्यावरणीय गिरावट की प्रक्रिया पर्यावरणीय मुद्दों के प्रभाव को बढ़ाती है जो पर्यावरण पर स्थायी प्रभाव छोड़ती है।

पर्यावरणीय ह्रास संयुक्त राष्ट्र के खतरों, चुनौतियों और परिवर्तन पर उच्च स्तरीय पैनल द्वारा आधिकारिक तौर पर चेतावनी दिए गए दस खतरों में से एक है। आपदा न्यूनीकरण के लिए संयुक्त राष्ट्र की अंतर्राष्ट्रीय रणनीति पर्यावरणीय क्षरण को "सामाजिक और पारिस्थितिक उद्देश्यों और जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्यावरण की क्षमता में कमी" के रूप में परिभाषित करती है।

पर्यावरण ह्रास कई प्रकार से होता है। जब प्राकृतिक आवास नष्ट हो जाते हैं या प्राकृतिक संसाधन समाप्त हो जाते हैं, तो पर्यावरण का ह्रास होता है; प्रत्यक्ष पर्यावरणीय ह्रास, जैसे वनों की कटाई, जो आसानी से दिखाई देता है; यह अधिक अप्रत्यक्ष प्रक्रिया के कारण हो सकता है, जैसे समय के साथ प्लास्टिक प्रदूषण का निर्माण या ग्रीनहाउस गैसों का निर्माण जो जलवायु प्रणाली में टिपिंग पॉइंट का कारण बनता है। इस समस्या का मुकाबला करने के प्रयासों में पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरण संसाधन प्रबंधन शामिल हैं। कुप्रबंधन जो ह्रास की ओर ले जाता है, वह पर्यावरणीय संघर्ष को भी जन्म दे सकता है जहां समुदाय पर्यावरण का कुप्रबंधन करने वाली ताकतों के विरोध में संगठित होते हैं।